



# श्री ६ विश्वाखिर्द्रनाद्रीय ।



ঢাকা, বাঙ্গালা-যন্ত্ৰ। শ্ৰীমদনমোহন বসাক্ৰারা মুক্তিড

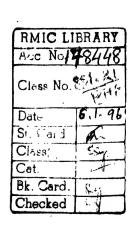
ও এছকার কর্তৃক প্রকাশিত।

----

मेन २००२ ।

म्ला । ० जामा ।

·28



# यू ग्राज्य ।

|           |                                    |               |                     | णवाकम् ।          |
|-----------|------------------------------------|---------------|---------------------|-------------------|
| . 5 1     | विकशिः …                           | •••           | •••                 |                   |
| 21        | উৎসর্গপঞ্জম্ · · ·                 | •••           | •••                 |                   |
| 01        | (त्वनमञ्जातः                       | •••           | •••                 |                   |
| 8         | ভারতী বড়ুপাচারাঃ                  | •••           | •••                 | 1-4               |
| ۱۵        | श्रह्मा                            | •••           | •••                 | >                 |
| ७।        | ত্ৰহ্মপুত্ৰতীরাবস্থিতভাপ           | नमर्जुबः ७०   | সহ চক্ৰপ্ত          |                   |
|           | कर्लाभक्षनम्                       | •••           | •••                 | <b>20</b>         |
| 9 1       | চন্দ্ৰত শিৰারাধনং ভংগ              | হে বাক্যাল    | in:                 |                   |
|           | পাৰ্কতী দৰ্শনঞ                     | •••           | •••                 | 8-20              |
| ٧ı        | कानीचारि ठळा प्रशीप                | াৰ্শনং তৎস    | ₹                   |                   |
|           | कर्शांशकर्वनकः · · ·               | •••           | •••                 | .20-25            |
| 2         | ठक्कण देवगुना <b>थपर्यन</b> म्     | * •••         | •••                 | >>->0             |
| • 1       | চন্দ্রক্ত গরাতীর্থ দর্শনং ব        |               | য়াদিকঞ             | >8>9              |
| 1 (       | हक्कमा कानीपर्ननः शक्कार्य         | নঞ্           | ****                | 24-24             |
| <b>R!</b> | गक्राखनः                           | •••           | •••                 | 2 A               |
| 100       | বিশামিত্রভবনগামনং ত                |               |                     | 32-52             |
| 8 1       | বারানস্যামবন্থিতিঃ দেব             | त्रधनः व्यक्त | <b>পূ</b> र्वार्कनक | <b>2</b> 2-20     |
| ۱ s       | বিখেখরার্চ্চনং মহিদ্ধন্তব          |               |                     | <b>२०—</b> २8     |
| 10        | দেব্যাবির্ভাব: চন্দ্রস্য তা        |               | •••                 | ₹6-29             |
| 91        | বারাণজাং শ্রীক্লফদর্শনম্           | তৎসহ ক        | থাপকখনম্            | SP-69.            |
| 140       | 🖣 ক্লফত স্থতি:                     | •••           |                     | 01 <del>-00</del> |
| 160       | চন্দ্ৰভা শুক্ৰণাসৰ বিবাদ:          | •••           | •••                 | .00-08            |
| 10        | वातावकाः भूनताशयनः                 |               | •••                 | <b>ာ</b> ခ        |
| 1 65      | ধর্মপুত্তেণ সহবস্তিরাল             | <b>পশ্চ</b>   | ***                 | 98-0¢.            |
| 1 55      | <b>इ.स.मा. विक्रुलाक्</b> ट्यांशिः | •••           | •••                 | . 06              |

# RMIC LIBRARY Acc. No. 78448 Class No. 61-31 Date Si. Gard Class Cat. Bk. Card. Checked

# स् विज्या

|               |                            | 1               |               |            | পতাৰম্।          |
|---------------|----------------------------|-----------------|---------------|------------|------------------|
| <b>&gt;</b> ! | विकशिः                     | }               | ***           | •••        |                  |
| ۹ ۱           | উৎসর্গপত্তম্               | •••             | •••           | •••        |                  |
| 01            | (नवनमञ्जातः                | •••             | •••           | •••        |                  |
| 8             | ভারতী বড়ুপা।              | त्रंबा:         | •••           | •••        | 1-1              |
| ¢ I           | গ্ৰন্থ চন।                 | •••             | ***           | •••        | ٠,               |
| 91            | ত্ৰহ্মপুত্ৰ <b>ী</b> রাব্য | <u>ইততাপ</u>    | नमर्भुबर खर   | সহ চক্ৰস্ত |                  |
|               | কথোপ কথন স্                | •••             | •••           | •••        | <b>20</b>        |
| 91            | চক্ৰফ শিবারাধ              | # <b>4</b>      | হে বাক্যালা   | প:         | •                |
|               | পাৰ্বতী দৰ্শনঞ             |                 | •••           | •••        | 8-30             |
| 71            | কালীঘাটে চন্দ্ৰ            | ७ (मनी          | ৰ্শনং ভৎসা    | ₹          |                  |
|               | কথোপকথনঞ্চ                 | •••             | •••           | •••        | <b>برن- در</b> . |
| 21            | চন্দ্রস্থা বৈদ্যনাথ        | <b>मर्जनम्</b>  | *             | •••        | >>->0            |
| 001           | চন্দ্রতা গয়াতীর্থ         | मर्भमर व        | লমুভীর ক্রি   | য়াদিকঞ    | >8>9             |
| 16            | हक्तमा कानीपर्नन           |                 |               | ****       | 39-34            |
| R!            | गमाञ्चरः                   | •••             | •••           | •••        | 36               |
| 100           | বিখামিতভ্ৰনগ               | मनः ७           | সহ শাস্ত্রপ্র | मज:        | 2952             |
| 8 1           | বারানস্যামবন্থি            | <b>ड</b> ः ८५४। | রধনং অরং      | र्गार्कनक  | 22-20            |
| 1 3           | विष्यंत्रार्क्षभर          |                 |               |            | ₹७—₹8            |
| 91            | मिवाविश्वां ह              | হ্রদ্য তচ       | পাৰনা         | •••        | 28-29            |
| 91            | वातानकार जीक               | क्षनर्भनम       | তৎসহ কৰে      | াপকখনম     | 23-45            |
| <b>F</b> I    | 🖣 কৃষ্ণত স্বতি:            | •               | •••           |            | . 02-00          |
| 16            | <b>ठळ्ळ अक्लाम</b> र       | faatu:          | •••           |            | .00-08           |
| 0 1           | ৰারাণখাং পুনর              |                 | •             | •••        | 98               |
| 31            | धर्मभूरवन जरुदर            |                 | পশ্চ          |            | . 989€.          |
| 21            | <b>ठळ</b> ना विक्रुताः     | ह्यां शि        | •••           | •••        | . 06             |
|               | 10.1 1 Kault.              | -111/01         |               |            |                  |

### অশুদ্ধ সংশুদ্ধিপত্রম্।

| শ্লোক সং    | ধ্যা অভদ্ধপদং                | ७६१६:                    |
|-------------|------------------------------|--------------------------|
| 61          | ক্ষাতৃমিছামি                 | ক্ষাতৃমিক স              |
| 338         | কৌপিনবশেস্থ নারং             | কৌপিনবেশস্কর             |
| 200         | প্রিপকেকু শালনীডিঃ           | পরিপকেকুশালী বি          |
| 250         | মহিংশা                       | মহিংশা                   |
| 234         | <b>ম</b> ৰৰ্গ                | মৰ্থ                     |
| 275         | প্রাহমি                      | প্রমহসি                  |
| 125.        | ম্মারাতি                     | <b>স্মায়াতি</b>         |
| 285         | ভোইর্গদেন                    | ভোগৈৰ্ঘেন                |
| <b>२</b> 8२ | ८ मं य गर गर खटे हे          | <b>(न्दग्रेन्ड्रे</b> डे |
| ₹8€.        | প্লাকস্য প্রথমচরণাম্বরংপাঠ্য | ং "চন্দ্ৰউবাচ'           |

# বিজ্ঞপ্তিঃ।



সংস্মৃত্য পাদারবিন্দং প্রিয়তরং
মোক্ষমূলং ধ্যানাধিগম্যং গুরুণাং ॥
জ্ঞানায় জীবানাং বিরুতস্তধুনা
গ্রন্থোহয়ং দীনেন বিদ্বংঞ্জনায় ॥
বিষ্ণুমুনিবংশ ধরেণ শ্রীগুরুচরণ দেবশর্ম ভট্টাচার্যেন।
অস্ত সর্ক্ষবিধং সত্তঞ্চ রক্ষিত্মিতি।

শকাব্দাঃ ১৮২৪। মাঘস্ত প্রথম দিবলে।
ঢাকা নগর্যাম্!

# ওঁ স্বন্তি দেব শ্রীমৎ রাজরাজেন্দ্রলাল শর্মাণঃ সহধর্মিণী মদাত্মজোপমা রাজলক্ষী শ্রীমতী হিরণবালা দেবী শ্রীকরকমলেবু—

কমলে কোমলপ্রাণে দেবারাধ্যে হলোচনে বিনোদয়তি চিন্ততে গ্রন্থোহয়ং সকলো ভবেৎ।

> স্লেহানুগত শ্ৰীবাণীকান্ত দেব শৰ্ম্ম ভট্টাচাৰ্য্যস্য ৮

#### দেবনসজারঃ।

নিও গৈছিল স্বগুণং বিশ্বস্থ ধাতা
যশ্চ পালয়তি সংহরত্য উমূর্ত্তা।
তক্তহি হুলরস্থাং নমামি হুগাং
মত্তো যক্তা বাঙ্রসাস্বাদৈর্মহেশঃ॥ ২
কুফোছলি স্বলোষং প্রক্ষাল্যপ্রকৃষ্টঃ
জন্মমাসাদ্য পুতো গর্ভস্থঃ পুরা।
ক্রোড্রেছেন্স্পমেয়াং বর্ণ্ধ শোভাং
চন্দ্রাকো বিজিত্য রত্বকাঞ্ধনোরা।।
০

# ভারতী ষড়ুপচারাঃ।

যন্ত্রী বীণা নদতি মধুরং গীতি রাগৈ বিমিশ্রং
প্রীতিং শোভাং বিদধতি করে চারুচন্দ্রাননেতে।
বস্ত্রং কোশেয়মনল দৃশামগ্রগণ্যে পুনস্তাং
রত্বালক্ষাররচিততকুং রাজতে চাতিরম্যাম্॥ ৪
জাতা মন্দাঃ সমরবিমুখা ভারতেচার্য্যবীরা
জাতা মন্দাঃ নৃপতিনিকরাঃ ধর্মহীনা অনার্য্যাঃ ।
জাতা মন্দা অলসকল্যাঃ বিষৎকূলপ্রসূত্যঃ ।
রামে রম্যে কথমিংচতে সম্ভবস্তি বিকাশাঃ॥ ৫
দিব্যামালাঃ স্থরসরচিতা সারগর্ভাঃ পুরাতে.
কঠেল্মা দয়িতস্থরভিঃ হারম্কাংহিজিত্বা
পুল্পেচ্তে রতিরতিবলা তে ভ্রমাদ্ বা ক্ষায়ে
আশা দীনে ব্রম্ভতিচপদং ক্ষুদ্রলোভাৎ গণাণাম্॥ ৬

# [ %]

এষা মালা বিকচকুষ্ঠমর্থন্যনংসদ্যজাতৈঃ
কণ্ঠাযোগ্যা ভবতি রচিতা হীনকান্তিপ্রভাবাৎ
ক্রিল ধন্তে বিমলদশনে স্বর্বগুরে হুশীলে
সৈষা বৈ তে পদবলয়তাং গছতু ধ্যানগম্যে ॥ ৭
রত্বালকারবান্তল্যে সতি হুগদ্ধিসকুলে।
কুশবধু মুর্গাক্ষী কিং মুঞ্চতি শ্রাসিন্দুরম্ ॥ ৮
স্রোজং কুষ্মদ্রোণং গৃহতাং সমচক্ষুষা
মধ্যভাবে গুরংগ্রাহুং বিজ্ঞানাং কল্প এসহি।

## অথ বিশ্বাভিহরুনাম্বার**া**স্

নারায়ণে মহাদেবে মুক্তকলেবরে কলিঃ। লব্বেষু পাণ্ডুপুত্রেষু স্বর্গমায়াতি ভাষণঃ॥ ১০ विश्रा धर्माः न जानिष्ठ नहाहातः नह कियाः। ন গুরোঃ শাসনং বর্ণা গছন্তি পাপশাসনাৎ । ১১ এবং কলে। সমুৎপল্লে ধর্মকর্মবিলোপিনি। পাপার্ত্তিব্যাধিত্ব:খালৈয়ন্তাপিতা মানবাঃ সদা ॥ ১২ জেতুং তমিহ সংগ্রামে প্রব্রতো দ্বিজনন্দনঃ। প্রেক্যমানঃ কলেঃ শক্তিং স্বয়ঞ্চ পীড়য়ান্বিতঃ॥ ১৩ ধর্মসংস্থাপনার্থায় চাত্মানং পরিরক্ষিতৃং। হিতায় দেবদেবীনাং সচেফশ্চাভবন্তদা ॥ ১৪ বিসদৃষ্ট হৃথং ভোগং চচার ধরণীতদে। ভিক্ষারং প্রাণরক্ষার্থং জগ্রাহ তাপদে স্থিতঃ॥ ১ इथः कानमकानः वा हिन्द्रमन् क्रोवमङ्गनः। दक्तभूदाः यायो स्वानः जाभीमक्रश्राक्तिकम् । ३७

র্ধানচকুত্তমুকীণত্তপরেশাবশেষভৃৎ।
সত্যসারত তত্তাসিৎ কলার্ৎপাদনার সঃ॥ ১৭
আর্ত্তিজ্ঞান্ত্র্যাবিজ্ঞানিভিন্চ পরিবৃতঃ।
জ্ঞানমূর্ত্তিঃ শুশোভেৎসো ভক্তবুদার্নিসেবিতঃ॥ ১৮
দুট্য তং দ্বিজ্বুদ্ধংসঃ প্রাণিপত্য কৃতাঞ্জলিঃ।
পপ্রহু পরুষা ভক্তা জীবানাং মেক্কবারণমু॥ ১৯

চল্ল উবাচ।' কুতো বা কথমায়াতঃ কিমর্থং বা ভ্রমামিচ। কথং প্রাপ্স্যামি বা দেব পরাতৃপ্তিং পরাগতিং। ২০

তাপস উবাচ।
শিশুন্তমাশ্রমাচারি কামনেরং মহত্তরা।
উভয়োরন্তরং দূক্া নৈতং স্বরূপপদ্যতে ॥ ২২
গ্রচ্ছ গচ্ছ গৃহংগচ্ছ স্বক্সনিরতো ভব।
জ্বানাং মঞ্চরংক্সা জীব বর্ষপতং অবং ॥ ২২
"বুদ্ধোচ মাতাপিতরো সাধ্বীভার্যা হতঃ শিশুঃ।।
জপ্যক্র্যাপতংক্সা ভর্তবা। ম্বুরত্রবীং" ॥ ২০
পোষ্যবর্গান্ পরিতাল্য কবং স্বর্গমবাপ্সাদ।
ভরণং পোষ্যবর্গানাং প্রশন্তং স্বর্গমবাপ্সাদ।
ভরণং পোষ্যবর্গানাং প্রশন্তং স্বর্গমবান্য ॥ ২৪
পিতৃব্যো মাতৃনশ্বের ভাতরো গুরবন্তবা।
স্বর্বতি চালমিছন্তি স্বন্ধে বিপ্রাঃ স্মাগতাঃ ॥ ২৫

কাণাস্কক্জপঙ্গুভো বধিরেভো বিশেষতঃ ।
পরিদ্রেভো ধনংদ্যা ক্রমেন নয় জীবনম্ । ২৬
আন পানাদিকং বিপ্রে দেহি বংস প্রযম্বতঃ ।
গ্রুবং তুটে মহাফলং ব্রাহ্মাণ্ডে বেদপারণে ॥ ২৭
দারং সাম্প্রতমৃদ্ধৃতা স্বর্শাস্ত্রামহামতি ।
যমরা প্রদন্তঃ তুভাং তদ্গৃহিত্য স্থীভব ॥ ২৮

ব্যাপ উবাচ।

বৃদ্ধন্য বচনং শ্রুত্বা বক্তবুং বালঃ প্রচক্রমে। আশৈশবানি হুঃখানি কর্মজাতানি ধীমতে # ২৯

চন্দ্ৰ উবাচ।

যত্ত্বং ভবতা দেব গার্হস্থাং ধর্মমূত্রমং ।

অধেনাচরিতং সর্বাং মোকায় বৈ ন কল্পতে ॥ ৩০
প্রাতরারভ্য কর্মাণি দ্বিযামা যামিনীং প্রভা ।

নিত্যং করোমি ভূতায় শাস্তিং ন বেদ্মি শাষ্তীং ॥৩১
অনিত্যং নশ্বং অধং কর্মজং কাল বাহিনং ।

ত্যক্তা অধী যথা ভাম তৎবদক্ষ মহামূনে ॥ ৩২

ব্যাস উবচে।

আকগ্য বচনং বৃদ্ধ স্তাবৎ বালস্য পৌরষং। পুপাত ধরণীধিমে ছিন্নভক্তরিকাশ্রয়াৎ॥ ৩০

তাপদ স্তাপিতোহত্যস্তং পুনরাহ সতেজসং। নৈতদ্ধি রোচতে বৎস যথেচ্ছিস তথাকুর । ৩৪ বিপ্রেণেত্বং প্রবর্ত্তিতশ্চন্দ্রো বালশশী যথা। প্রণিপত্য দ্বিজ্ঞেষ্ঠং সমায়াতঃ পুনগৃহিম্ ॥ ৩৫ শাস্ত্র পাঠে তথাধ্যানে চেতদা নির্ম্মলেন হি। বর্ষমেকং স্থথং নিয়ে পরিব্রতো বিপশ্চিতঃ॥ ৩৬ যদ্গুছুং প্রমং তত্ত্বং মুনিভিঃ পরিরক্ষিতং। তন্মলভ্যং নরৈঃ শাস্ত্র পঠনাদেব কেবলম্ ॥ ७৭ অৰ্চয়িতুং পুনদে বং গছত্যদো প্ৰশান্তধীঃ। ছুৰ্গায়া ভবনং যত্ৰ ডিষ্ঠতি চ পিণাকধুক্ । ৩৮ সপুষ্প কুন্দশাখাভিঃ শারিভিম্বগশাবকৈঃ। রিরাজ তদ্গৃহং রম্যং শান্তিদক্ঞকাননম্॥ ৩৯ পরিবৃতো ভক্তবুলৈঃ স্থাবর রাক্ষকন্মরা। মুগ্মপুর্ত্তো ক্রোড়ে কৃত্বা শোভতের্যভধ্বজঃ॥ ৪০ বিনয়াবনভম্ভত্র প্রণিপ্লাত পুরঃসরং। অর্চ্চয়তি বিধাতারো পার্ব্বতীপরমেশ্বরো ॥ ৪১

#### চন্দ্র উবাচ।

- বিভাগং হরপৌরীতি প্রপদং বৎষয়া প্রভো। জগৎসিস্ক্রমা বাপি পালনধ্বংসহেতবে । ৪২ भूगंष्ट्र एकन सांसम् तक्कष्र श्रास्थात ।

हतक् सम सांमिणः ठिकठक्कनकातुग्म ॥ ८०

मञ्ज्ञक्कसाधानाः खगानाः खण्टा विद्धा ।

खगटा हन्मगाः पः हि वागर्थाः शिक्तत्रगम् ॥ ६८

कगन्दानिज्ञरानिखः कगन्दानिज्ञकः ।

कगनानिज्ञनानिखः कगन्दानिज्ञकः ॥ ८८

धात्रक्कव शानाकः साराज्यः खज्ञकव ।

किःन मिधाकि दनदग्म सानवण्य सरीवदन् ॥ ६५

पः शिक्तामि शिका दनवानास्थि दनवजा ।

श्राद्धानः भक्षत्र धीदात्म शाक्काविश्वत्रक्ष्म ।

प्रश्वानः भक्षत्र धीदात्म शाक्वविश्वत्रक्षम ।

पर्थानानान्दक्षीवभ्वक्षवर्गः सनानिव ॥ ८৮

ব্যাস উবাচ।

কিমত্রাগমনং বংস কিংবা চিন্তয়সীহতং। বদবৈ সর্ব্বমন্মাকং শিবেনোদিরিতং বচ:॥ ৪৯ শ্রুডা সক্রদয়ং বাক্যং চক্রঃ প্রকৃষ্টমানসঃ। নীলকণ্ঠমন্বিকেশং প্রণনাম পুনঃ শিবমু॥ ৫০

মহাদেব উবাচ। বাঞ্চি চেৎ রমাং ভাষ্যাং গৃহাণেমাং হুরূপিনীং। রাজ্যং কাজ্মতি চেতুর্হি পুরেহস্মিন্ বস্তিং কুরু ॥৫১ ইনং রাজ্যং গৃহিছামাং স্থানং কুরু সন্তম।

যেনাহং ক্লেশসংগ্রা ছতীপোঁ-স্মি তথা কুরু ॥ ৫২
শ্রুতিতং বচনং চন্দ্রো দেবদেবতা ধীমতঃ।
স্বিতং কুত্বা পুনঃপ্রাহু কঠলগ্রকরামুকঃ॥ ৫৩

চন্দ্ৰ উবাচ।

ন কাজ্যে বিজয়ং রাজ্যং নচ ভোগ স্থানিচ।
কাঞ্চনজামিনীভোগং দৈহিকং ক্ষণভঙ্গুরং॥ ৫৪
প্রণমানি সদাগোরীং জগদ্মাভাং পতিত্রভাং।
দেবানামীখরীং দেবীং জীবহিতরভামুমাম্॥ ৫৫
তত্ত্বমিচ্ছামি বৈদ্যং যৎ বিখোৎপত্তে মনোহরং
আজাগো জন্মস্বভঞ্চ জগতঃ প্রাণধারণম্। ৫৬

মহাদেব উবাচ।
শুণু বংস প্রবক্ষামি যদ্যংজং জ্ঞাজুমিচ্ছামি।
কথিতংযদপার্কতিয় স্তন্যযুগলায়চ ॥ ৫৭
দ্বাদশরংসাংব্যাপ্য ধনাদ্যৈ: শরীরেন চ।
যত্ত্বয়া চরিতং তপ স্তংকলমমূতোপমম্॥ ৫৮
মম্মাধর্ম্মামাগত্য নারায়ণপরাক্ষম:।
দ্বিজকুলগতোহপিত্বং ক্ষাত্রধর্মইবোথিত: ॥৫৯
একছত্ত্বীনৃপন্তংহি যুগান্তরে ভবিষ্যদি।
নহি কশ্চ কলা রাজন্ রাজানংভামুপেক্ষতি ॥ ৬০

ভিজেহিং বিজরাজেন্দ্র শশাক লাঞ্জনো হর।
কাত্রধর্মং মহাকর্মং কাজ্যতি নেহ মে মনঃ ॥ ৬>
রলোগুণোত্মিতা দেব কর্মণামসমস্পৃহা।
ন শাম্যেৎ কর্মণাবাঢ় মনলোহবিষা যথা॥ ৬২ ।
প্রদীদ দেবদেবেশ মা রুথা কেছিকং কুরু।
অপি তৈলোক্যরাজ্যস্য কিং ফলং পৃথীশাশনাৎ ॥৬০
প্রপন্নতি যথৈবেন্দুং প্রভাতো নিশিভোগিনং।
তথা ভোগস্য রাজান মবসাদো হি দহ্যতে॥ ৬৪

#### মহাদেব উবাচ।

শ্রুতং তৎসর্ব্বমন্ত্রাভিঃ যৎজ্ঞানং যোগিনাং মতং।
তথাপিত্বং প্রিয়োবাল শ্রেচাপদেশং গৃহাণ মে। ৬৫
বারাণশীং ব্রজাংকুট্রাং মদধিষ্ঠান মৃত্তমং।
তপশ্চর কিয়ৎকালং যাবদ্ধ দেবদর্শনম্। ৬৬
মোক্ষধামং মৃমৃক্ষুভি মুগ্যতে সভতং বুধৈঃ।
সমাচর ততো বৎস তীর্থপর্য্যটনং ব্রতং। ৬৭°
অযোধ্যা মপুরা কাশী গয়া কাঞ্চি অবন্তিকা।
পুরী দারাবতী চৈব সক্তৈতে মোক্ষ দায়িকা। ৬৮
অ্যত্রতু কৃতং পাপং গঙ্গায়াঞ্চ বিনশ্যতি।
গঙ্গায়াঞ্চ কৃতং পাপং বারাণস্তাংবিনশ্যতি।

যদি কিঞ্চিৎ কৃতং ভাতে চুক্কতং বংস জন্ম জং।
বারাণশী বিনশ্যতি গয়াগঙ্গাদহোদিতা ॥ ৭০
দেবান্তত্ত্ব সমভ্যক্ত্য প্রাপ্ত্যান্স্তমং।
দিব্যজ্ঞানংতপঃসাধ্যং দেবানামপি চুর্লভং॥ ৭১
আত্মিব চান্মনোবন্ধ্যুংরিপু রাজৈবচান্ত্রনঃ।
ইতি চিত্তে সমাধায় চান্মনোব সদা রম ॥ ৭২

#### পাৰ্ব্বভূ্যবাচ।

ভিষ্ঠ বংশ যাবভূভ্যং দদামি কবচং মম।

যেনাত্যানং পরিরক্ষ্য কর্নার্য্যং সাধ্যিষ্যাস। ৭০
মহেশ্বরোমহোমতঃ কীর্ত্তিতোদেবদানবৈ:।
ইতিমন্তা মহাদন্ত অর্গলাং আর নিত্যশাঃ ॥ ৭৪
আশীষং গৃহু মান্সল্যমন্ত্রুক্র্যাদমন্তিং।
বিপদি আর গোবিন্দং চক্রপাণিং চতুর্ভুক্রম্ ॥ ৭
ভুক্তেন্দমমূতদারং দেবৈরিপদিত তপুলং।
মন্ত্রাণি শুরুদতানি যতে! গছুন্তি গৌরবম্ ॥ ৭৬

#### ব্যাস উবাচ।

দৃষ্ট্বা দেবীং মহেশীংতাং সর্ধ্বাভরণভূষিতাং। তপ্তকান্ধনবর্ণাভাং পুর্ণেন্দু সদৃশাননাম্॥ ৭৭ লোচনত্ত্রয়সংযুক্তামর্দ্ধেন্দুক্তশেখরাং। প্রাণম্য স্থেহশীলাংস ইদমাহ যথাযথং॥ ৭৮

#### চশ্ৰ উবাচ।

ভগবতি ভয়চ্ছেদে কাত্যায়নি চ কামদে। শরণ্যে ত্রান্থকে গৌরি বারায়নি নমস্ততে ॥ ৭৯ ত্বমাদ্যা প্রকৃতিঃ প্রোক্তা ব্রহ্মাবিফুমহেশ্বরৈঃ। অচিতা সহদেবেন প্রসীদপর্মেশ্বরি॥ ৮० একৈবত্বং জগমাতি স্থয়া সর্কমিদং ততং। ত্বয়া বিস্তজ্ঞাতে বিশ্বং জগদেতচ্চরাচরমূ॥,৮১. ত্বং লক্ষীত্বং হিসাবিত্রী সভীত্বং হি হুরেশ্বরি। পাহিমাং সর্বাপাপেভ্যো রক্ষমাং তিদশেখনি ॥ ৮২ অন্নং চতুর্বিধং স্থানং রবৈঃ যড়ভিঃ সমন্বিতং। শিবভুক্তং প্রদাদক্ষেৎ ভক্ষয়ামি প্রয়ত্বতঃ ॥ ৮০ কুত্রতিষ্ঠতি দেবেশি দৈত্যকুঞ্জরকেশরী। কালিন্দীকলকল্পোলকোলাহলকুতূহলী॥৮৩ দিব্যমাল্যাম্বরধরং দিব্যগন্ধানুলেপনং। **ठर्क् जः ठर्क्कुः** गार्कः खिद्रा वित्राजिए म् ॥ ५ ह क्षकु भिष्ठांभि ८ ९ ८ व नि क्षः कम्लटला हनः। শহতে গদাপদা ধারিণং বনমালিনম্॥ ৮৬

ভগবভাবাচ।

শি বাজ্ঞয়া যদাবৎস কাশীধামং গমিষ্যসি। তদা জক্ষসি গোবিন্দং পদ্মাননহন্যোভিত্য ॥ ৮৭: আত্মানং নির্মাণীরত্য পশ্যস্থাত্মানমাত্মনি। বীক্ষসিত্বং শিবংমাঞ্চ সর্কানি পরমাত্মনি। ৮৮ বীতরাগভরক্রোধঃ সর্কজীবহ্রিতেরতঃ। মাধবং ভজ চাত্রের তবজ্ঞানং ভবিষ্যতি॥ ৮৯ হুপত্যুংথে সমেরত্বা কামুসঙ্কর্মবর্জ্জিতঃ। তপদে কেবলং তাত তপশ্চর হরিপ্রির॥ ৯০

ব্যাস উবাচ।

ভাক্ষপথ্যপা বর্ণাঃ সক্ষে শৃণুস্কমেবচঃ।
অপূর্নংতে সমায়াতং সময়ং কলিগোচরম্ ॥ ৯১
যথা চন্দ্রন্তমোহন্তি পাপান্হন্তি সবালকঃ।
কলের্বলং কলেঃরাজ্যং তিরস্কৃত্য প্রবন্ধ তৈ ॥ ৯২
ধারত্যদে মহাবলী কালীঘাটং দিবোপমং।
গঙ্গাগর্ভে কৃতস্থানঃ সন্ধ্যাদিনি সমাচরেং ॥ ৯৩
প্রবিশতি অধীবালো দানধ্যান প্রায়ণঃ।
পুরোহিতং পুরস্কৃত্য মন্দিরং হেমনির্দ্ধিতং ॥ ৯৪
তত্ত্র দেবীং সমারাধ্য প্রদ্ধাত্বতেজসা।
মূলমন্ত্রং দেবীস্ক্রং জপ্ত্বা স্কৃতিঞ্চকার সঃ॥ ৯৫

চন্দ্ৰ উবাচ ৷

কালি কালি মহাকালি কালিকে কালনাশিনি। আন্তয়া বরদা দেবি প্রদীণ পরমেশ্বরি॥ ৯৬ চতুর্তি চতুর্তি মুগুমালোপশোভিতে।
শক্ষতকাগদাপাথারিশী যোগিনী পরা॥ ৯৭
হংহন্ত্রী পালায়িত্রীচ শিববক্ষ বিলাসিনি।
পাহিমাং সর্ব্ধপাপেভ্যঃ শক্ষরপ্রাণহারিণি॥ ৯৮
কামকোধং পরাভ্য় ছিত্বা ধ্যোভং সভেকসং।
ভাতি খড়গঃ করেযস্ত মোহাৎপাতু স মামপি॥ ৯৯
পাদভারং বহেৎশিবো দৃষ্ট্রাস্থং যদিসজ্জনে।
শয়ণং ক্রুদেবেশি ক্রোড়ে ভর্তুঃ প্রসীদমে॥ ১০
দেহিশিরসি মেদেবি পাদপামনাময়ং।
যদ্ধনং গচ্ছিতং শিবে তদস্তমে মহেশ্বরি॥ ১০১

#### কালী উবাচ।

গচ্ছবংস যথাকাল মনুকূলা দিবে কশং।
জ্ঞানমপেক্ষতে কর্মা কশানং কর্মসমূদ্রবম্॥ ১০ই
দ্য়াদৃষ্টিপরোবিজ্ঞ হ্যবলায় সদাভব।
ক্রিয়ো মহন্তবাঃ সর্বাঃ মইনব ভিন্ম মূর্ত্রঃ॥ ১০৩
মা হিংস্থাংসর্বাইভানি ছন্দ্রদাসীয়তে বচঃ।
আহারে ব্যবহারে চ স্মরনিত্যং বিধোক্ষিতঃ॥ ১০৪
যৎকরোবিষদশাসি যংজুহোবি দদাসিষ্থ।
তংস্বাইং ব্রহ্মণেশ্বা ব্রহ্মণ্যোধিগচ্ছসি॥ ১০৫

ইয়ংলীলা মহেষেণ শক্তিভক্তেন ধীমতা। কৃতা যাসূর সংগ্রামে তদস্ত তক্ত গোরবম্॥ ১০৬ যথা চন্দ্রো কুমুন্বত্যাঃ নলীক্তা ভান্ধরো যথা। তথাগুরুঃপতিঃ স্ত্রীনাং সঞ্জব পূজ্যতাং ব্রচ্নেৎ॥১০৭

বাৰ্ণি উবাচ।

শ্রুতিং কর্বংবচ শ্চন্দ্রেহির্পাগ্রুৎ।
পুনরাদৃত্য দেবীঞ্চ স্বক্র্ম দিন্ধয়ে যধো॥ ১০৮
এবমভ্যুক্ত্য তাং কালীং কলিকল্মধ নাশিনীং।
পদত্তকে প্রযথোচ মথাদিফো মহামতিঃ॥ ১০৯

**इस्टर**ण देवनानाथ नर्भनः।

হেনন্তে শরদন্তরে শশ্যপূর্ণা বহুন্ধরা।
প্রীতিং দদাতিচাত্রেয়ে পদ্ধা কর্দ্দমবর্চ্ছিতা॥ ১১০
মার্ত্রগোতপো নৈব রুটেরজজাবর্ষণং।
ক্রিশ্নাতি পর্যাটন্তংতং বালকং ছত্রবর্চ্ছিতইম্॥ ১১১
বারিপাত্রং করেমাত্রং কোপিনবশেহান্দরং।
উত্তরীরং গৃহিদ্বৈকং চচার চাবনীতলে॥ ১১২
ভিকাদ্ধং দেহরক্ষার্থং শীতবন্ত্রভবাভবং।
শাকং শাল্যোদনকৈব সমানং ক্রাদিচন্ত্রয়ন্॥ ১১০
তারকেশং প্রপুদ্ধানো ভক্তিজ্রাসমন্বিতঃ।
শচ্ছতি বৈদ্যনাথায় রুখেন চাতিরংহ্সা॥ ১১৪

প্রীত্যা পুষ্পাঞ্জলিংদত্বা ব্যাধিনাশায় চানঘ:। গিরিশৃঙ্গং সমীপত্থ মারুরোহ সকৌতুকম্॥ ১১৫ তত্র পশ্যতি <del>শু</del>ক্লাজে বাণলিঙ্গং প্রতিষ্ঠিতং। অচিতং মুনিভিনিত্যং বিল্পদল বিস্থৃতিভিঃ॥ ১১৬ মুত্রল লতয়াকীণ শ্চাণ্ডজমঞ্জুকুঞ্জনৈঃ। দদৌহর্ষং গি রস্তুস্মৈ তরুরাঞ্জিহ্নশোভিত:॥ ১১৭ কোমলকমলপ্রায়ং হাদয়ং স্থপংক্তিতং। তস্থ জনয়তি ক্ষপ্রং কদম্বপুলকং বপুঃ॥ ১১৮ দৃষ্টিঃ পততিরম্যেষু বিনানেষু বদা হতে। মেঘমালা অথংদ্দ্যাৎ নীললোহিতরঞ্জিতা॥ ১১৯ পাদতলে সমেভূমো রম্যহর্ম্ম্যগৃহাদিভিঃ। বিটপীবিপনীপংক্ত্যা নগরী চ হুশোভতে ॥ ১২০ ভাসুরস্তাচলং যাতি মন্দং বহতি মারুত:। নুত্যতি প্রকৃতিস্তাভ্যাং সোমাগমং সমীক্ষ্যচ॥ ১২১ क्टेकुवः मान्नारमीन्नर्याः हत्साश्टमी वंक्षनाः निर्मार । ন মুঞ্জি ভ্রমোময়ীং চাতকো বীরিদং যথা ॥ ১২২ দুষ্টেশাং প্রক্রুতেশ্চিত্রাং প্রিয়ং ত্রিদিবত্বল ভাং। আনন্দে ভাগতে বালো বিশ্বতাগ্যপ্রম: শুচিঃ॥ ১২৩ . প্রণমা দেবদেবেশং স্বকর্মোদ্ধরণপ্রিয়ঃ। ব্দবতীর্য্য কলাদেব জগাম চাতামং পুনঃ॥ ১২৪

#### गप्ता छीर्थ पर्यंतर।

নিৰ্গচছ তি যদা চক্ৰঃ পুনঃ পৰ্য্যটনায় চ। रगागीतृन्मः अधिनृष्ठी इर्धःरलए नितारिलम् ॥ >२४ তোষঃন্ প্রনিপাতেন পরিপ্রস্নেন সেবয়া। আত্মতন্ত্রং পরংতকুং যাচতে স্বত্ভাষয়া॥ ১২৬ যতীভিঃ ব্রহ্মচারীভিঃ ব্রহ্মধ্যান পরাস্কলৈ:। অভিনন্দিত কামায় চাশীর্কাদঃ প্রযোজিতঃ ॥ ১২৭ এবং তুরু: সবালেক্র আজগাম গরাপদং। বিফুপাদং মতোদৃট্যা পরং হর্ষ মুপাগমং ॥ ১২৮ গ্যা শির্দি পাদাক্তং বিফোর্বিক্রমশীতলং। অর্ক্তরে: প্রয়া ভক্তরা ফরোদকেন মণ্ডয়া। ১২৯ ্তর্পনং পিতৃলোকানাং বিধায় মতিমান্তদা। শিব:কাশী শিবঃকাশী জপ্তেতি প্রযমো পুরঃ । ১৫০ কেল কিশ্যেশ: গমিষ্যামি কলাক্রক্যামি শকরে। কদালীনো ভবিষ্যামি পাদাজে শিব শীতলে। ১৩১ 'ইতি কলুখিতং বেগং ধারয়ন্ ধৃতিমান্ শিশুঃ। কাশীযাত্রাঞ্বেদ্ধীরঃ শিশিরোয়ং সমাগতঃ ॥ ১৩২ প্রিপকেকুশালনীভিঃ রঞ্জিতা চনকোদ্গমৈ:। ध तेजी विषयि शिक्षः मिनित स्मानिस्त ॥ ১৩०

অমৃতং শিশিরেব হ্লিমমৃতং দাধুদর্শনং। অমৃত্যনমাতিথ্যং লক্ষাযোগী স্থংব্ৰজেং ৷ ১৩৪ কেবলং ক্লিউমাত্মানং নিশায়াং মন্যতে স্থাই। শীতবন্ত্র বিন। বালো নিবদনু বিটপীতলে। ১৩৫ ইথং রমিত শাস্তাজা বল্ধুতীর মুপাগমং। পণ্যত্যশ্বথমেকঞ্ বিশালং বিস্তায়ত্ম্ । ১৩৬ তংপার্শে বারিদংলয়ে ভিকালকোনতাপদ:। উপবিশ্য জুহোত্যমং যজ্ঞায় যজ্ঞবহ্নিদঃ ॥ ১৩৭ বক্ষার্পণং বক্ষহবিঃ বক্ষাগ্রে বক্ষণাস্কতং। একৈব তেন গন্তব্যং ব্ৰহ্মকৰ্ম সমাধিনা। ১৬৮ বন্ধাণ্যাচর কর্মাণি বন্দসংহাট চেতসা। ব্রহ্মণ্যাচরতঃ কর্ম সমগ্রফরদায়কম্ ॥ ১৩৯ চতুর্বর্গমভিপ্নদি ব্রহ্মধ্যানপরোভব। उरेकार मर्ऋमिकिरम। त्रकां के बक्कानेश्रम ॥ ১৪० সহযজ্ঞাঃ প্রজাস্ফু। পুরোবাচ প্রজাপতিঃ। অনেন প্রদবিষধ্বমেরবোস্থি উকামধুক্ ॥ ১৪১ বিষ্ণুপ্রীতিক্তেচন্দ্র: হবিধা তণ্ডুলেন চ যজ্ঞভাগং বিধায়ৈতৎ ব্ৰহ্মণেহদো নিবেদয়েৎ ॥ ১৪২ বজ্ঞশিক্তং যদাবাল: প্রাণেভ্যো দাতুমিচ্ছতি। বলাং প্রভন্নবোত ব্রম্ভিব্যতি নৈঋতাং ॥ ১৪৩

**मिरम्मार्के (अर्थार्थ) क्रुधार्र्खा विनर्धन ह ।** পচ্যমানং পুর:স্থিতমন্নং নন্দ্রমবেক্ষ্য সং॥ ১৪৪ অভুদ্ব্যাকুলচিত্তস্ত কুৎপিপাদাদমাকুলঃ। তিরশ্চকার চেশানীং বিশ্বেশীং যজ্ঞনাশিনীম্ 🔒 ১৪৫ ঝটিতি জগতাং ধাত্রী ছাঁয়াং সম্পানয়ন্তনা। অধ্যেব্যং করোত্যন্নং দীনার্ভভয়বারিণী ॥ ১৪৬ रेनमझः भूरत्रानीतः भौजाष्ट्रकृ। क्षृश्ली । মহন্ত্রং মহন্ত্রহং প্রাপ সঃ পরমাত্রনি 🛚 ১৪৭ বর্ত্ত্বাকারছায়াধঃ দৃষ্ট্রন্থানং স্থরক্ষিতং। সমস্তাং বায়ুর্ষ্টিশ্চ নোদ্বিজ্ঞ নিরাকৃতঃ॥ ১৪৮ হর্যাতি হর্ষমালভ্য বিয়তি কারণংতদা। অন্বেষতে মহাতেজাঃ সহাস্যোমদগর্দ্ধিতঃ ॥ ১৪৯ ন পশ্যতি মহেশ্বরীং ক্রীড়ায়াঃ কারণং ন সঃ। ভর্গবত্ত্যা কৃতিঞ্চিতৎ মত্তিরক্ষার-পীড়য়া 🛚 ১৫০ यनाभारने वर्शिकि अः उन्हीं मा शत्रामधती। অন্তরীকেছিত। নিত্যা তাড়য়েং পুনরস্কলা ॥১৫১ অহঙ্কারাৎযতো বালো মন্যতে বিজিতেশ্রী। বঞ্জাবাতঃ করোত্যেন মাকুলং শ্রোত্রচক্ষ্যা॥ ১৫২ দেবাঃ নৃত্যন্তি গায়ন্তি স্বর্গে দিব্যাঙ্গনাশ্চতে। পুষ্পবৃষ্টিমবেক্ষ্যহি মাঘে পুণ্যে ধরাতলে। ১৫৩

বৰ্তি রাশিরাশীষাং বক্ষাৰিফুমহেখরাং। যদা রোদিতি বালোসোঁ 'মা' ইত্যর্ক্ষোক্তিমাত্রয়া॥:৫৪ তংস্থানং প্রমং রম্যং তৎদৃশ্যঞাতিমোহনং। কাশীযাত্রাপ্রব্যুত্তাংপি ত্যক্তুংু শক্ষোতিনানঘঃ ॥১৫৫ ''গচ্ছতি পুরঃ শরীরং ধাবতি পশ্চাদদংস্থিতং চেতঃ। চিনাংশুকমিবকেতোঃ প্রতিবাতং নীয়মানক্ষ' 🖫 ১৫৬ আত্মকর্মা পুনর্বালঃ সাধ্য়িতুং সমুৎস্ককঃ। রাজপন্থানমাশ্রৈত্য যথে বারাণশীমূখং॥ ১৫৭ -গতে বহুতরে দেশে আমাৎ আমান্তরে পথি। স্মৃতিং লক্ষা স্মরেমিত্যাং জগদ্ধাত্রীং চতুভু জাম্॥১৫৮ সমেত্য চাপরে তীরে গঞ্চায়াশ্চোপদেশকে। ''কাশী কাশী' ধ্বনিংকুত্বা পরপারং প্রগচ্ছতি॥ ১৫১ গঙ্গামাত্র স্নান্থাচ কুত্বা নিত্যক্রিয়াদিকং। অঠয়তি মহাভাগাং স্তোতি চ বিন্যায়িতঃ ॥ ১৬০

शक्रार्कनर । हज्य छेवाह ।

"বিষ্ণুপাদার্ঘ্যমস্তুতে গঙ্গে ত্রিপথগামিনি। ধর্ম্মদ্রবীতি বিখ্যাতে পাপং মেহর জাহ্ববি ॥'' ১৬১ ভাগীরথিনমামিছাং হরমোলীবিলাদিনি। জীবদি কিং মৃতাচাদি গঙ্গে ধরাবিলম্বিনি॥ ১৬২ উদ্ত্য দাগরান্বীরা নপর্যাপ্তবলা যদি।

অর্চয়ন্ কিং ফলংনস্থাং কাশীতলবিরাজিনি ॥ ১৬৩
পুণ্যশীলংতপোবস্তং ত্রান্থা চেদিদ গর্মিতা।

অধনোদ্ধরণং গঙ্গে মাহান্ত্যুৎ তেনযুজ্যতে ॥ ১৬৪
কৃপাংকুরু স্বতস্তন্তা জাহুবি ভক্তবংদলে।

নাহনিহৈব স্থাস্থানি যাবচচন্দ্র দিবাকরো ॥ ১৬৫
উতিষ্ঠোত্তিঠ দেবেশি দানিধ্যমিহকল্পয়।

দার্দ্ধং সপ্রস্থিপুত্রাভ্যাং শিবেন মাংসমুদ্ধর ॥ ১৬৬
জহ্মুনিভয়াদেবি মতোভীতাদি স্থবতে।
অপত্যং মাং বিজানীয়াধন প্রদিয়ে স্পুশাম্যহং ॥১৬৭

#### गन्नाखतः।

থরতরধারাং বহদি শোভনে
সরদিজমালা নন্দয়তীহত্বাম্।
ইথমসুভূয় রমদে সূরিভিঃ
হরমম তাপং করুণাবারিভিঃ॥ ১৬৮
গগনে ধরণো ধবলে চরণো
ইহতে লভতে তপদা মতুজঃ।
পাহিমামপিছফ্কভদশ্পতমুং
অধ্যোদ্ধরণে গুরুতা মহতাম্॥ ১৬৯

### ব্যাস উবাচ।

শ্রুবিং সাঙ্গতং স্কোত্রং ভক্তিপূর্বং হ্রেম্বরী।
ক্রোড়ে কৃষ্টা নয়ংবালং বিশ্বামিত্র মূনেগৃহং॥ ১৭০
পুণ্যশীলা দেবারাধ্যা মূনিপত্নী ত্রিলোচনা।
দাপ্পত্যপ্রেমসঞ্জাতশিশুরুলঁহণোভিতা॥ ১৭১
অভিনন্দতিচাত্রেরং সম্যাসেন সমাগতং।
দলাতি চাম্তং তদ্ম নানাস্বাদ সমন্বিতং॥ ১৭২
অন্নংজলমুপাদেয়ং দধিত্রশ্ববির্যুতং।
আজপ্তা মূনিনা প্রবংপ্রিয়দলা পতিব্রতা॥ ১৭০
সংপূচ্য গুরুবদ্বে মাশ্রমে তম্ম ডিন্টতি।
শাস্ত্রমাশ্রিত্য বালোহসো বিশ্বেশ্বরং স্মরেৎসদা॥১৭৪
তারাপতিস্তপোপুঞ্জারিণীপ্রিয়বল্লভঃ।
বিনোদয়তিচাত্রেয়ং দয়াদ্রচেত্যা তদা॥ ১৭৫

বিখামিত্র উবাচ।
স্বাগতংতে মিতাচারি সন্মাসং তেনযুক্সতে।
স্বকর্মং কুরুচাত্রের যেন ধনাগমোভবেৎ॥ ১৭৬
বেশধারণমাত্রেন সাধুশ্চেৎভূবি মানবঃ।
কাকঃ কোকিলতামেতি চামুক্ত্য মধুস্বরম্॥ ১৭৭
চিত্তং বিশেশরোবেত্তি ভক্তিংকাজ্যতি শক্ষরঃ।
সম্বলং ভক্তিষোগংতে মহেশ্বো গ্রহিষ্যসি॥ ১৭৮

## চন্দ্ৰ উবাচ।

কাচভক্তিন্তপঃ কিম্বা বেত্তি তত্ত্ববিদামর।
সর্বাং ত্রিলোচনাবেত্তি নবেত্তি চোগ্রতাপদঃ। ১৭৯
ধনলোভাদ্যদাদের জ্বেরঃ কর্মাঞ্ররোমতঃ।
ভবতাপি গৃহংগত্তা স্বর্কম সমুপাশ্রতাম্॥ ১৮০
উগ্রতপশ্চরদের সর্বাং পশ্রাদনষ্টবং।
ফলন্তিদাধুবেশাচচ খলেইপি সাধুনাং গুণাঃ॥ ১৮১
যথান্তব্যে তথাবেশে গুণক্রিরাদমন্ত্রঃ।
বিক্রমস্থাদনে হাজ্ঞঃ বিজ্ঞো দানরতো যথা॥ ১৮২

, বিশা তি উবাচ।

ভাবাৎ সঞ্জায়তে বেশঃ ভাবোবেশেন কচিৎ।
সূক্ষানশী সদাপখ্যে দন্তরমূভয়োরপি॥ ১৮০
সাধুবেশং সমাপ্রিত্য পাপঞ্চরতি মানবঃ।
বেশস্ত গোরবং রক্ষ ততো বৎস সমাহিতঃ॥ ১৮৪
জ্ঞানমীখরতিক্তিশ্চ তপো নিষ্ঠা দমঃশমঃ।
তাপমে সন্তবোঘাতি বাক্ষাণে চাতি নির্ম্মানে॥ ১৮৫
'ক্তেরং যত্তংপ্রবক্ষ্যামি যজ্জাতাম্তমশ্বুতে।
স্কাতঃ পাণিপাদান্তং সর্ববেতাহকিশিরোমুখং।
সর্বতঃ প্রতিমন্ত্রোকে সর্ব্যান্বত্য ভিষ্ঠিত ॥ ১৮৭

সর্ব্বেন্দ্রিয়গুণাভাসং সর্বেন্দ্রিয় বিবর্ট্জিতং। অদক্তং গুণভূচ্চৈব নিপ্ত'ণং গুণভোক্তচ ॥ ১৮৮ বহিরস্তশ্চ ভূতানামচরং চরমেব চ। সূক্ষাস্থান্তদৰিচ্ছেয়ং স্থানহং চান্তিকেচত । ১৯৯ অবিভক্তঞ্চ ভূতেরু বিভক্তমিব চ স্থিতং। ভূতভর্ত্ চ তঙ্গুজেরং গ্রাদিফু প্রভবিষ্ণু চ॥ ১৯০ জ্যোতিবামপিত<del>জ্</del>জোতি স্তমসঃ পরমুচ্যতে। জ্ঞানং জ্ঞোয়ং জ্ঞানগম্যং হৃদিদর্ববস্থ বিষ্ঠিতম্ ॥.১৯১ ইতি ক্ষেত্রং তথাজ্ঞানং জেয়ঞোক্তং সমাসত:। মদভক্ত এতদিবজ্ঞায় মন্তাবায়োপপদ্যতে<sup>»</sup>॥ ১৯২ ''দেবদ্বিজগুরুপ্রাজ্ঞপুজনং শোচমার্চ্জরং। ব্রহ্মচর্য্যমহিংশা চ শারীরং তপ উচ্যতে ॥ ১৯৩ আয়ুদত্ববলাবেগগা স্থধপ্ৰীতিবিবৰ্দ্ধনাঃ। রক্সাঃস্লিগ্ধাঃ স্থিরাহৃদ্যা আহারাঃ দাত্বিকপ্রিয়া''॥১৯৪ বিদিত্বা মূলসূত্রানি অক্ষতন্ত্রপরাণি চ। তপশ্চর ক্ষণংধীর স্মৃত্বা বিশ্বেশ্বরংবিভূম্ ॥ ১৯৫ দেবীভক্তং মহাসত্ব জ্বানামিত্বাং বিশেষতঃ।. कव्यिष्कृष्ठभाक्ष्यः भीत्र श्रीति श्रीति शिष ॥ ১৯৬

178000

THE TASE KRISHME MISSION.
TO TE SE CULTURE .
100 SEV

#### ব্যাস উবাচ।

ইত্থং পৃট্টো মহাত্মানং ভক্তিমান্ সরলোছিজ:। সর্বং নিবেদয়ামাদ বল্ধুতীর ক্রিয়াদিকং। ১৯৭ ব্ৰহ্মাৰ্পিতমনোবৃদ্ধিঃ দাক্ষাৎকারেপ্দয়া তদ।। স্মরেদ্বিফুং জপেমন্ত্রং তালগের সদারমে ।। ১৯৮ কেদারেশং প্রপুজ্যাদো বিশ্বেশ্বরং ত্রিয়ম্বকং। অর্চরতি মহাকালীং চান্নপূর্ণাং চতুর্ভুকাম ॥ ২৯৯ এবং কাশীপুরে দিব্যে ত্রেশুলোপরিসংস্থিতে। শিবস্থা বিমলানন্দং লেভে সাধুরহর্নিশম্॥ ২০০ ঘাটে মনিক্ৰিকায়া ঞাশ্বনেধে মহাফলে। অৰ্ক্তয়েদধুনা দেবান্ স্নান্থা গঙ্গাজলৈঃ স্থম্ ॥ ২০১ স্থবর্ণখচিতং রম্যমন্নপূর্ণ। প্রতিষ্ঠিতং। দৃষ্ট্রাহ্ন্ম্যং প্রস্কষ্যাদো স্তোতিচ বিশ্বমাতরম্॥ ২০২ মাৰ্কণ্ডেয়ং প্ৰপূজাাথ চণ্ডীং পঠতিভক্তিতঃ। অর্চ্চরতি মহাদেবং সগণাঞ্চ মহেশ্বরীম্।। ২০০

- अन्तर्गार्कनः। हस छेवाह।

অন্নপ্রাণাঃ কলোজীবা অনায়ত্বাং ভঞ্জীতবৈ।
তানং লকা প্রহায়ন্তি কিমন্তং প্রার্থয়ে পুনঃ॥ ২০৪
বিখেবরি মহামায়ে জগন্ধাত্রী চতুত্ব ।
তানং প্রবর্দ্ধান্ধত্যং ধন্যাত্বং যদিমন্তবে ॥ ২০৫

নাভিনন্দামি মাতত্ত্বা মন্ধং মন্তেচ নিক্ষলং।

দেবভূক্তং নচেদন্ধং যজায় নচ বর্ততে ॥ ২০৬
প্রদীদদেবদেবেশি সর্কদেব নমস্কৃতে।

দেবান্তৃপুস্বযজ্ঞেশি তেরু দ্য়াপরাভব ॥ ২০৭
জনায়ত্বাং ন বাঞ্ছামি ভিক্ষান্ধং প্রচুরং মম।
জ্ঞানায় দেবধর্মায় পূজয়ামি বরাননে ॥ ২০৮
জীবাধর্ম্মরতাঃ সস্কু দেবাঃ সস্কু হবিভূক্তঃ।
বহুদ্ধরা পবিত্রাস্কু পাপভাপবিবর্জ্জিতা ॥ ২০৯

## ব্যাস উবাচ।

অনপূর্ণা পরিতুটা বরং দদে বিমানতঃ।
জ্ঞানং গুহাতিগুহুং প্রাপ্রাসনাত্রসংশয়ঃ॥ ২>০
দেবেন্দ্রং মৌলিমন্দারং মকরন্দকণারুণং।
প্রণম্যাদে প্রয়ম্মেন বিদ্যনাশকরং বিভূম্॥ ২>>
নমশ্চকার শাস্তায় কারণত্রয়হেত্বে।
গঙ্গাজলৈঃ অপুজেশ্চ দশ্ধা রিশ্বনীঞ্জলিম্॥ ২>২
অথ বিশ্বেরং স্তোতি লিন্সিনক পিনাকিমং।
বিশ্বপালং জগরাথং চিদানন্দসদাশ্রেয়ম্॥ ২>০
দেবগন্ধর্বরম্যানি স্থোত্রাক্তম্পুস্মানি চ।
চক্রকণ্ঠাৎ বিনিঃস্ত্য কল্পন্তে হুমুতস্তদা॥ ২>৪

চক্স উবাচ। মহিন্দান্তব:।

"মহিন্দাং পারক্তে পরমবিদ্ধবো যদ্যসদৃশী
স্তুতি প্রনাদিনামপি তদবদগ্রন্ত্রিপিরঃ
অথাবাচ্যাং দর্শ্বমতিপরিণামাব্ধিগৃণন্
ম্মাপ্যেষাং ভোত্তে হর নিরপ্রাদাং পরিকরং॥ ১১৫

অতীতঃ পদ্ধানং তবচ মহিমা বাঙ্মনদয়ে। রতদব্যার্ভ্যা যংচকিতমভিধতে শ্রুতিরপি সকস্য স্তোতব্যঃ কতিবিধগুণঃক্স বিষয়ঃ পদেক্সেচিনে পততিন্মনঃ ক্স ন্বচঃ॥ ১১৬

অন্ধন্মানো লোকাঃ কিমবয়ববস্তোহপি জগতামধিষ্ঠাতারং কিং ভববিধিরনাদৃত্যভবতি অনীশো বা কুর্য্যাৎ ভূবনজননেকঃ প্রতিকরং যতোঃ মন্দাস্তাং প্রত্যমরবর সংশেরতইমে॥ ২১৭

এয়ী সাংখ্যাং ধোগং পশুপতিমতং বৈষ্ণবমিতি
প্রভিবে প্রস্থানে পরীমিদমদঃ পথামিতিচ
ক্রিচিনাং বৈচিত্র্যাদৃত্ত্তীলনানাপথযুবাং
নৃগানেকো গম্যস্থম্যি প্রসামবর্গ ইব ॥ ২১৮

বহুলরজনে বিখোৎপত্তো ভবায় নমোনমঃ ভুম্প্রকৃতে সম্বৃদ্ধিত্য মৃড়ায় নমোনমঃ প্রবলতমদে তৎসংহারে হরায় নমোনমঃ
প্রমহনি পদে নিজ্ঞৈতণ্যে শিবায় নমোনমঃ" ॥ ২১৯

ব্যাস উবাচ। দেব্যাবির্জাব।
স্থোত্তৈরেবন্ধির্বালোবন্ধজ্ঞিং স্থমনোহরৈঃ।
তোষয়নাশুতোমংহি প্রতিদিনং স্থাংনয়ে:॥২২০
আদ্যাংশবাসনা: দেবাং পুণ্যকাশীবিরাজিতাং।
সমভ্যর্ক্তর মনায়াতি যথাকালং নিজাপ্রমন্ম॥২২১
ত্রবং বিচরতন্তস্য কাশীপুরেপরাজনি।
আবির্জবতি দেবেশী নিশাভাগে স্বমন্দিরে॥২২২
দৃষ্ট্বাতাংজগতাংধাত্রীং জোতির্দ্ময়িং চতুর্জ্জাং।
নিরঞ্জনাং নির্জ্কিকারাং পপ্রচ্ছ বিনয়ান্বতঃ॥২২০১

চক্র উবাচ।
প্রাদান মহেশিস্থং কিং করোমি বদস্বমে।
ধন্যোহং কৃতকৃতোহ মাগতাদি যদা গৃহম্॥ ২২৪
অজ্ঞানে জ্ঞানদানেন শক্রহিংদানিবারণাং।
উপকারং কৃতংজ্ঞানে তেনাহং ক্রীনিতস্কুয়া॥ ২২৫
অহমিতি যদজ্ঞানাং ব্যাহ্মতমধুনাময়া।
তদ্ধস্থা তব পদাজে লয়ংকৃক্রলীলাপ্রিয়ে॥ ২২৬
আবাহনং ন জানামি ন বাঞ্জামি বিস্ভ্রনং।
পূজনং নৈব জানামি ক্রহিমে কিংকরোম্যহং॥ ২২৭

পাপো<sub>ই</sub>হং পাপকর্মাহং পাপাত্ম পাপসম্ভবঃ। আহিমাং সর্বপাপেভ্যঃ সর্বপাপবিনাশি মি ৷ ২২৮ কত্বাং বেত্তিতত্ত্বেন মাতর্ক্সতিক: পুনঃ। মন্ত্রানিকানি বা দেবি চোপচারঃ কথংসুবা ২২৯ ठलमूर्या अश्नाम्ह (नेवानाः श्वानधातिनः। ম্ব ল সূক্ষা প্ৰাৰ্থাশ্চ দৃশ্যন্তে যেচভূতলে ॥ ২৩০ স্ঞ্জসিত্বমুপাদানৈঃ কৈস্তান্ বেদ্মিনতত্ত্বতঃ। কর্থং রা রচদে বিশ্বং চালয়দি কথংকুবা ॥ ২৩১ অত্যাশ্চর্য্যং স্থমেবহি চাশ্চর্য্যবং ক্রিয়াতব। আশ্চধ্যঞান্ত্রণঃ সৃষ্টিঃ জড়জীববিমিশ্রণা ॥ ২৩২ স্বমেব প্রমামায়া মনবুদ্ধেরগোচরা। মায়াতীতা কথংমাতঃ মায়য়া রচদে জগং ২৩৩ প্রদীদ জগতাংধাত্রী সচ্চিদানন্দরূপিণি। ত্রানংকুরু দয়াশীলে পাতুমাংত্রিদিবেশ্বরী॥ ২৩৪ অবিদিততমুৱাগে বিশ্বমৃত্তিৰ্যহেশি। অবি দিত গঠনোপাদানদেহাবলি । পদসরসিজযুগাং চারুচন্দ্রবিজয়ি। শিরদি সরলমতে দেছিনে স্তিধাতী॥২৩৫

## ব্যাম উবাচ।

ত্রবং চিন্তরভন্ত জন্য জ্ঞানবিহ্ন লচেত সং।
পশ্যত এব চন্দ্রন্য ত ত্রৈব সান্তর্মীয়ত ॥ ২৩৬
যথাদৃষ্টং ঘথাপৃষ্টং সর্কংনিবেদ্য বালকঃ।
মূনয়ে হর্ষদন্ত প্রঃ শান্তোভূৎ তপদে স্বিতঃ ॥ ২৩৭
ক্রতং চন্দ্রেন দিব্যক্ষ হ্যদ্ভূতং লোমহর্ষণম্ ॥ ২০৮
তংপাভূ নঃ পৃথীবীক্ষ যুম্মাকক্ষ মহাভয়াং।
করোতু কোশলং বালঃ প্রক্রিমাকোশলান্ত্রিকঃ ॥ ২৩৯

# দেবা উচুঃ।

ধন্যা মাত। স্থগর্ভিণী বালক্ষ্য মহীতলে।
ধন্যোহদৌ বালকোজেয়ঃ চিরংজীবেৎদকোশলম্।
যন্ত্রলভ্যং যজ্জদানৈ স্তপ্যা কঠোরেণ বাং।
তদস্মাকং স্থলভ্যঞ্চ যাতং বাল্ডামোদ্দমাং। ২৪°
অভিনন্দর ধীরেন্দ্র মভিদিঞ্চয় নির্দ্ধানের ।
গঙ্গাজনিস্তথাভোগৈ যেন বালঃস্থংব্রজেং। ২৪১

বাাস উবাচ।

ইত্থং দেবগণৈক্তে ফৈ রাশীর্ভিরভিনন্দিতঃ। পূজয়েৎ বালকো দেবান্ কাশীধামে হ্যবন্দিতান্॥২৪২

ইন্দ্রং সূর্য্যং বরুণঞ্চ ব্রহ্মাবিষ্ণুমছেশ্বরান্। व्यक्टरबर भौजनार (पर्वीर भाखिमब्रीर महस्त्रमार ॥२०० হুরম্যে মন্দিরে তত্ত্র গঙ্গা সৈকত সনিধী। পশ্যন্ গুণনিধিংকুষ্ণং পরংত্রক্ষে নিয়েজিতং ॥ ২ 8 ৪ मःशृक्य त्मवत्मत्वभः द्रशेषिक विनत्यन छम्। কথং ব্রন্দাবনং ত্যক্তা মথুরাং ত্রিদশোভনাং ॥ ১৪৫ সমাগত ইহৈবত্বং পুত্রকলত্রব জি তঃ। মনশা কেং বিচার্য্য বা ভিন্তমি শিবস্মিধো # ২৪৬ ভবভারং ব**হ**দ্বিত্যং তুরবস্থাং গতোযদি। জ্যজভারং স্থংজীব ত্যাগোহি সাত্বিকঃ স্মৃতঃ ॥ ২৪৭ অনুবগ্ধন্তি কর্মানি দেহিনং কর্ম্মসঙ্গিনং। ইতিবীক্ষ্য মহাদেবঃ শাশানে রমতে সদা॥ ২৪৮ সত্ত্বস্থ কুরুকর্মানি কর্মশ্রেষ্ঠমকর্মনাং। কদাপি ন দহেতাপঃ কুরুক্ম তথা বধং॥ ২৪৯ কিংকুবক্ষ্যামি দেবেন্দ্র চাতীতেতমদাংছয়ি। मुक्तरक्षां शि महाजाग जमित नौग्रतम कथः॥ २०० দেহিজ্ঞানমজ্ঞানেচ রক্ষপাহিচ সর্মণা। বিনাজানপ্রবাহেন রাজ্যস্ত কোশলং কুতঃ॥ ২৫১ শাস্ত্রাৎ পরতরং নান্তি জানস্থ কারণং ভূবি। যজ্ঞাৎ পরভরং নাল্ডি কর্মমণিধীনানিছ । ২৫২

প্রদীদ যজ্জভাগেশ প্রীতিতে যজ্ঞ বৈশ্বতঃ।
জীবা যজ্ঞগুতাঃ সন্ত যজ্ঞ শর্মা হানিদ্রতম্ ॥ ২৫৩
যথাপুরা তথৈদানীং জ্ঞানংদ্যামহীতদে।
কুরুরাজ্যং গৃহানার্য্যং বৈরাগ্যং তেনযুজ্যতে ॥ ২৫৪
বৈরাগ্যং শিবসোন্দর্যাং বৈর্ত্তবং তত্মধীমতঃ।
কর্ম্মাজ্যেশ্বর নৈতৎ তত্মিমেন হ্লেশাভতে ॥ ২৫৫
কুত্ররামো মহাভাগঃ কুত্র বা প্রনাদ্মকঃ।
ক্লিরাজ্যবিনাশায় গুরুভক্তে হিক্লভঃ॥ ২৫৬

# শ্ৰীক্লফ উবাচ।

হথং জীব সভীসূত শ্লাঘ্যক্ত ঘিজনক্ষন।
মহামায়াপ্রসাদেন জ্ঞানং গচ্ছতু নিত্যশং ॥ ২৫৭
সর্ববংকালবশাক্তাত দৈবচক্রেন চেষ্টিতং।
অবস্থান্তরমাগত্য নিত্যমিহৈবতিষ্ঠতি ॥ ২৫৮
দৈবং প্রস্থান্তরমাগত কালন্চ শরীরং মনঃ।
ইন্দ্রিরানি ভবস্তীক কারণং কর্মবোগিনাম্ ॥ ২৫৯
কর্মব্রোজাক্তবং বিদ্যিক্তনাক্ষরসমূত্তবং।
কর্মবোগং সমাজিত্য ক্রমণ্যেন ততোরম ॥ ২৬০
সর্বদ। পশ্যতিজ্ঞানী হাভেনং দিবলাময়োঃ।
জ্ঞানং বৈরাগ্যমূলংহি জীবানাং মোক্ষকারণম্ ॥ ২৬১

নবৈরাপ্যাৎ পরংভাগ্যং নবোধাৎ পরমঃ স্থা। নহরে: পরতন্ত্রাতা বিশ্বিবং স্থীভব্ ॥ ২৬২ অভক্তে বঞ্চক ধূর্তে জানংৰপ্তা ফলংকুকিং। फूक्त्रः क्रीत्रमानाना मःभनाद किः निवर्त्तरक ॥ २७० जुक्ता कर्त्राक्ताः जीरवा<sup>र</sup>रेवताशाः नज्राज्यनि । তপদাচাতিভীত্তেণ ব্ৰহ্মজাৰং পড়েন্ডদা ॥ ২৬। ব্ৰক্ষজানং তথাতাত চাত্মজানং মহাধনং। সন্তব্যে লভতে ধীরঃ গুরুকুপাবলেনছি ৷ ২৬৫ न मञ्चरत्रमृथानाः कामरकाधरनीनृशाः। ধনতৃষ্ণালুলোপানাং তত্ত্বজানং প্রজায়তে 🛚 ২৬৬ আত্মসংযমনং প্রাপ্য গুরুদেবারুপাধনং। মুক্তঃপুর্বকুতাৎপাপাৎ পর্মেশং লভেরর: ॥ ২৬৭ জাতপ্ৰহিঞ্জৰং মুড়াঃ প্ৰবং ক্ৰমমুভত্ত চ। मुज़ाः कंत्रकि गर्साराज शर्माशर्म श्रामिनः ॥ २७৮ মৃতঃ দৰ্ভৰ স্বাহেলাংশি কীৰ্ত্তিৰ্থত ন বিশাহত। मुकः गंबेर विस्कारता त्याम वित्रमुशांगरक ॥ २७৯ युशा छवान् छवा वृष्ट्रः वृष्ट्रा विधिना भाषाता । क्नानि (रञ्जकाषानि गर्फगरर नित्रचत्रः ॥ २१७ গোভাগাং বৃদ্ধি বা দেবে। ছেবেছরণসক্ষম:। कर्पकारिएक्सिर एम्ब्डिक्शिनार छात्। ३१%

"নগুরোরধিকং তত্ত্বং নগুরোরধিকং তপঃ।
তত্ত্ত্তানাংপরং নান্তি ত্রিয় ঞ্জিগুরবে নমঃ॥ ২৭২
নগুরোর্ধিকং নগুরোরধিকং।
নগুরোর্ধিকং নগুরোরধিকং।
মমশাশনতে। মমশাশনতঃ।
মমশাশনতে। মমশাশনতঃ।

ব্যাস উবাচ।

এবং কুষ্ণেন সংবৃদ্ধ শ্চন্দ্রোগচ্ছতি গৌরবং। প্রবংগ স্কোভিদেবেশং কুতাঞ্জলিপুরঃদরং॥ ২৭৪

চন্দ্ৰ উবাচ।

প্রদীন মরি দেবেন্দ্র দিব্যজ্ঞানগুণাকর। তমোরাশিং সদাদগ্ধা মামৃদ্ধর শচীন্ত্ত॥ ২৭৫ কিংকর্ম কিমকর্ম্মেতি ন জানামি তপোধন। কর্মসঙ্গসমাশক্তঃ হুখী কথং তবাম্যহম্॥ ২৭৬

अक्रुक खेताह ।

কিংকন্ম কিষকন্মে তি কবরোহপ্যত্র মোহিতা:। কন্ম ত্যাগ্যাৎ কথং তাত প্রাণধারণসম্ভব: ॥ ২৭৭ হথং ছঃধং সদাক্ষেরং চিত্তবৃতিক্রিয়াগুণং। কন্ম বিজ্ঞানমাজিত্য কুরুক্সম বিধেছিত:॥ ২ চন্দ্র উবাচ।
কম্ম জ্ঞানমহেশব্ধ কম্ম প্রেব সদাস্থা।
করিব্যে বচনংদেব সঙ্গং লক্ষা তবৈবহি ॥ ২৭৯
অনভ্যন্তানীতিং সরলমতি্মহো হতধিয়ং।
দরাদৃষ্ট্যা রাধারঞ্জন হরস্ত বিমলধীঃ।
করোবিদ্ধং জ্ঞানাদ্ধকলুষগতং গিরিবহুষাং।
ভক্ষামিদ্ধাং দেবং ভ্রুনবিরহিতঃ স্বরগুরো ॥ ২৮০

खिथद्रः द्रांशांत्रमनमानिद्रान्तः।

हांक्रलिश्चिक्छिक्क्यूभीगः ।

क्कानाम् शैमस्यः नमामि शूनसाः ।

शाक्रमाः सैनः मृतवत्रमिष्टिकः ॥ २৮১

कतिश्मसम्बद्धिः ।

क्कूमवम्नत्माणि ग्रामनः गास्त्रमिः ।

क्कूष्टमक्रिककासिनिक्ष्यम्भवतः ।

कत्रकृ कत्रकृ एषवः शाक्रमाः जिल्लक् ॥ २৮२

नानात्रश्यतः एषवः नानात्रप्ताशाणिकः ।

कनार्कनः क्षमाधः नमामास्तिक्ष्रमा ॥ २৮०

"क्ष्रकृतः श्रमः वानिकवाः ।

क्षिक्षेत्रम्भवेतः निर्मानः ।"

স্থমব্যয়শাশ্বতধর্মগোপ্তা। সনাতনত্তংপুরুষোমতোমে ॥ ২৮৪

ব্যাস উবাচ।

वाञ्चलवः প्रशृक्तारमी हस्तःमः शर्केमानमः। পিতৃলোকং পরিদ্রেষ্ট্রং গছতি নিজমন্দিরমূ॥ ২৮৫ শান্তিনিকেতনং প্রাপ্য বন্ধুভিজ্ঞ তিভিন্তদা । চতুভূ কাং সমারাধ্য ধীরে। হৃষ্যতি শাশতীম্ ॥ ৮৮৬-श्वक्रकृत्लाख्रतावित्था मञ्जवनममन्निष्ठः। সমায়াতি তদাততে শুরুপথহণায় চ। ২৮৭ সদালাপপ্রসঙ্গেন বর্ত্ততে গুরুণাসহ। শাক্তাভিষেক কর্মাণি তংপুছতি চ চন্দ্রমা॥ ২৮৮ নাভিবাচ্য ক্রিয়ামূলং গর্বিতো বিপ্রনন্দনঃ। দেবীমাদ্যাং কুমন্ত্রেণ নিজ্যাং পীড়রতি তদা 🛚 ২৮৯. ग्रुज्ञशायन्द्रमः शास्त्र विश्वारम् देवव हट्स्मा । ব্যাকৃলঃসন্ সারেমাভাং বিশ্বধাত্রীং চতুভূ কাং ॥ ২৯ • यथायात्रानमीश्राटम फ्रिट्येट समिल्दा । আবির্ভবতি দেবেশী ভক্তসংরক্ষণায়চ । ২৯১ চতুত্ব জা জগদ্বাত্তী সংস্করণা নিরঞ্জনা। বিবসনা মহামায়া জ্যোতিশ্বয়ী দিগম্বরা 🛚 ২৯২

ভূমো নিপাতিতং চন্দ্রং রক্ষতি তনমং পুন:।
তদ্বকোপরিদংখিতা ॥ ২৯০
দৃষ্ট্বা মাতাং মহেশীংতাং ভক্তরক্ষণতংপরাং।
নকাজকতি পুনশ্চন্দ্র আভ্যেকং গুরুক্তং ॥ ২৯৪
মাতরং পুনরাদৃত্য পিত্রে নিবেদ্য ভাবতঃ।
পরিত্যক্ষা গুরুংখানং বাদঃ কাশীং পরিব্রক্তেং ॥ ২৯৫

### চন্দ্ৰ উবার।

মাতর্তুর্গে ভূবনজননী বিশ্বধাত্তী মহেশী।

রক্ষাহীনং হরপদর্বেম রক্ষ্মিডং দয়ান্তা।

জ্ঞানংভক্তিং বিদধ্যিনরে হরমোহিনিদিব্য।
কালে কালে কুরুচকরুণাং রক্ষমাং জগদুরে॥ ২৯৬

# ব্যাদ উবাচ।

রাজা কাশীপুরে তিঠেৎ রাজেক্রো ধর্মনন্দন।
ধর্মাং ভজতি নিত্যোহসৌ ধর্মেন চ প্রবর্জতে ॥ ২৯৭
লক্ষা চক্রং তপোৰস্তং রম্যুহর্দ্যে অধংম্বিতঃ।
প্রীণাতি পুত্রবিদ্যাং দানৈর্ভোগৈঃ প্রমৃতঃ ॥ ২৯৮
তুকোহসোভন্সতেনিত্যং লক্ষ্মীনারায়ণং বিজুং।
ক্রীভিজ্ঞঃ সদালাপৈঃ রমতে বিপ্রনন্দনঃ ॥ ২৯৯

চন্দ্ৰ উবাচ ।

ক্রহি তাত পুনর্বক্ষ্যে স্থা কন্দ্র মহীতলে। বার্তা পন্থা কিমান্দর্যাং ভবস্তি কিন্নু ভারত ॥ ৩০০

ধর্মপুত্র উবাচ।

আশ্রমে রমতে নিত্যমিউধ্যান পরায়ণঃ।
াথণী মোদতে তাত শাকভাগং পচত্যপি॥ ৩০১
নিত্যমূদেতি সূর্য্যোহসো গচ্ছত্যায়ুনিরস্তরং।
কালো হরতি সূতানি বার্ত্তা চেয়ং রমাকিয়ু॥ ৩০২

"বেদাবিভিনাঃ স্মৃতয়ো বিভিনাঃ নাসৌমুনির্যক্তমতং ন ভিনং। ধর্মক তত্বং নিহিতং শুহারাং মহাজনো যেন গতঃ সংপদ্ধা॥ ৩০৩

ব্দহত্তহনি ভূতানি গছান্তি যমমন্দিরং। শেষাঃ স্থিরন্থনিছন্তি কিমাশ্চর্যামতঃ পরম্<sup>ত</sup>॥ ৩১৪

বাাস উবাচ।

এবং বিচরতস্তস্ত কালোস্থং সমিহিতো যদা। ত্যক্ত্যা দেহংস্মরন্বিফুং বিফুলোকং জগামসঃ॥৩০৫

मन्पूर्लीयः अष्टः।



